देवमूर्ति की परिक्रमा क्यों

जिस स्थान पर मूर्ति की प्राण–प्रतिष्ठा हुई हो, उसके मध्य बिंदु से लेकर कुछ दूरी तक दिव्य प्रभा रहती है। यह निकट होने पर अधिक गहरी और दूरी बढ़ने पर कम से कम होती जाती है। इस प्रकार प्रतिमा के निकट परिक्रमा करने से दैवीय शक्ति के ज्योर्तिमंडल से निकलने वाले तेज की सहज ही प्राप्ति हो जाती है। लेकिन यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि दैवीय शक्ति की आभामण्डल की गति दक्षिणवर्ती होती है। इसलिए शास्त्रों में मूर्ति के दाएं हाथ की और से परिक्रमा करने का विधान है। परिक्रमा को प्रदक्षिणा कहने का भी यही तात्पर्य है।

विदित हो कि उलटी यानि वामवर्ती (बाएं हाथ की तरफ से) परिक्रमा करने पर दैवीय शक्ति के ज्योर्तिमंडल की गति और हमारे अन्दर विद्यमान दिव्य परमाणुओं में टकराव पैदा होता है। परिणाम स्वरूप हमारा तेज नष्ट हो जाता है। इसीलिए वामवर्ती परिक्रमा वर्जित मानी गई है। यहां इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जाने–अनजाने में की गई उलटी परिक्रमा का दुष्परिणाम अवश्य भुगतना पड़ता है।

पूजा–पाठ एवं अभिषेक आदि धार्मिक कृत्यों के बाद प्रतिमा की परिक्रमा करने से अभीष्ट कामना की पूर्ति अविलंब होती है। शास्त्रों में विभिन्न देवताओं के संदर्भ में यह निर्देश दिए गये हैं कि किस देवी–देवता की कितनी बार परिक्रमा करें। उदाहरणार्थ, श्री कृष्ण भगवान की तीन परिक्रमा की जाती है। भगवती दुर्गा की एक परिक्रमा करने का विधान है। लेकिन शिवलिंग की परिक्रमा करते समय अभिषेक की धार को न लांघने का विधान है। ऐसी मान्यता है कि शंकर भगवान के तेज की लहरों की गति बांई और दांई दोनों और होती है।

★★★